विषय :- "बरसने लगी ओस की बूँदें"

रुआँटा घटाऐं के बूँदें

बेसहारा सूरज की किरणों से
बरसने लगी ओस की बूँदें
सूखे घास के ऊपर छाया,
ईश्वर का वरदान, माया।

सुबह के मतवाले उजाला,
ठिठुर रही थी वह, बेचारा
जीवन का निरर्थ बुलबुला
जीवन, पीड़ा-क्रीड़ा का सिलसिला।

लेकिन हरेक बूँद को, सच्चमुझ
है कहना एक कहानी, सूझ।
जाड़ से लेके वैसाख,
वे खुले रखे अपने आँख।

कहा यह भी जाता है ;
"ओस की बूँदों का बरसना,
है कई किसानों का हौसला
पंथी को पेड़ का छाया है घोसला।

'विचित्र' है ओस की बूँदें
जो मिलता है वन,सागर, ब्रह्मांड से
जिससे न मिलता जुलता हम
पर बरसने लगी ओस के बूँदें, लेके गम !

न! विचित्र है मानव,
हम जिंदगी के अनोखे पात्र
दुनिया के अनेक क्षेत्रों में छात्र
जहाँ संसाधन है केवल, मात्र
किसान भी खो रहे आर्द्रनक्षत्र !

सिंधु की अनंत लहरों में
सुनहले रोशनी से पाया जन्म,
घटाएं के वात्सल्य पाया है,
मिलता फिर लहरों में, न इसको मरण !

हम किया हत्य, इसके माँ नदियों को
घटाएं के अनमोल नदियाँ
बहा रही है खून सदियाँ !
विश्व के सुनहले खजाने
है, नाश के किनारे, जमाने !

खोल दो आशा के दर्वाजें,
ऊँचा रखो अपने आवाजें,
मिठा दो दर्द रूपी 'ओस'
उठो आत्मविश्वास रूपी सूर्य से, रोज़ !

मनु के कर्म से रिश्ता दूरी
जगत (ईश्वर) का है सपना अधूरी;
सबको मिलाना, जुड़ाना
एक ही है उपाय; विद्वेष को जलाना!

मैं लिख रहा हूँ ये पंक्तियाँ
आज के ज़माने का तितलियाँ
फैलादो अपने-अपने रंग,
खोना मत, अपने-अपने पंख !